भाषा-साहित्य एवं सामाजिक विज्ञान में शोध (अनुसन्धान)

Research In Linguistic Literature And Social Science

सम्पादक द्वय

डॉ. भावना एन. सावलिया

Dr. Mohmedhafiz Abdulhamid Kathiyara

प्रकाशन : अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य संस्थान,

गुजरात, अहमदाबाद

सरस्वती वन्दना (त्रिभंगी छन्द)

माँ हाथ जोड़कर, स्वार्थ छोड़कर,
तेरे वंदन, करते हैं।
माँ दर्श तुम्हारा, लगता प्यारा,
संकट पल में, हरते हैं।

हे ज्ञान दायिनी, वेद धारिणी,
निर्मल मन को कर देना।
अज्ञान मिटाकर, ज्ञान सुनाकर,
अंजल प्रज्ञा, भर देना।
जो द्वार तुम्हारे, आते प्यारे,
उसकी झोली भरते हैं।
माँ दर्श तुम्हारा, लगता प्यारा,
संकट पल में, हरते हैं।

झंकार करो माँ, कष्ट हरो माँ, चेतना जगा, दो मन में।
उत्थान करें हम, शक्ति न हो कम, आस यही है, जीवन में।
सत्पथ पर चलते, कंटक मिलते, कभी न फिर भी, डरते हैं।
माँ दर्श तुम्हारा, लगता प्यारा, संकट पल में, हरते हैं।

– डॉ. भावना एन. सावलिया

भाषा-साहित्य एवं सामाजिक विज्ञान में शोध (अनुसन्धान)

सम्पादक द्वय : डॉ. भावना एन. सावलिया
Dr. Mohmedhafiz Abdulhamid

यह एक बहुत ही श्लाघनीय कार्य है जो डॉ. भावना सावलिया और डॉ. मोहमद हफीज अब्दुल हमीद कठियारा ने एक शोध-पत्रात्मक पुस्तक को प्रकाशित करने का संकल्प लिया। जिसमें अन्यान्य विषयों पर अनुसन्धानात्मक आलेख निबद्ध किए गए हैं। निःसन्देह दोनों भूरि-भूरि प्रशंसा के पात्र हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में साहित्यिक और सामाजिक विज्ञान से सम्बन्धित अनेकशः ऐसे शोध-आलेख हैं जिनमें रचनाकारों ने अपने अनुसन्धानात्मक कौशल से अपनी अमूर्त अन्तर्दृष्टि को मूर्त रूप में आकलित किया है। मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक उन शोध-युक्त आन्वीक्षिकी की परिकल्पनाओं से शोधार्थियों के लिए अवश्य एक सन्दर्भ-ग्रन्थ रूप में सहायक होगी। प्रस्तुत शोध-पत्रात्मक पुस्तक में सम्मिलित रचनाकारों ने हिन्दी साहित्य एवं अन्य सामाजिक विषयों पर प्रकाशित पुस्तकों के सन्दर्भ में जो भी सूक्ष्म अनुभवों को एकत्रित कर एक सारगर्भित रूप दिया है वह निश्चित ही तत्सम्बन्धित क्षेत्र में उपादेय सिद्ध होगा। इन्हीं शुभेच्छाओं के साथ...

– डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव

डॉ. भावना एन. सावलिया

पता : हरमडिया, बाबा, ता. गोंडल, जिला-राजकोट, सौराष्ट्र (गुजरात) मोबाइल/व्हाट्सअप : 8849842456, ईमेल : savaliabhavna501@gmail, शिक्षा : M.A., M.Phil., Ph. D., GSET, सम्प्रति : प्रोफेसर, आर्ट्स कॉलेज मेघरज, जिला अरवल्ली, गुजरात

प्रकाशित पुस्तकें : (1) 'महादेवी वर्मा के समग्र साहित्य में नारी चेतना' (2) 'कविता सागर' काव्य संग्रह (3) 'जब से पास हुई हैं आँखियाँ' (छन्दबद्ध काव्य संग्रह) (4) 'लौट आओ प्रिय अपने देश' (गीत संग्रह) (दोनों कृतियाँ गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित) (5) संपादन : समकालीन विमर्शों में वर्तमान हिन्दी काव्य (सप्तकवि-काव्य- संकलन-1, 2, 3)' अंतर्राष्ट्रीय अवार्ड : ९, राष्ट्रीय सम्मान और पुरस्कार : २०, कहानी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रू. 21000/- का पुरस्कार, साहित्य-वारिधि, साहित्य शिरोमणि, साहित्य वाचस्पति, छन्दालंकार, छन्द शिल्पी, छन्द-प्रभ, छन्द-शिरोमणि मानद उपाधि से पुरस्कृत, 'राज्य स्तर पर 'कवि रत्न' और साहित्य साधना अवार्ड।

Dr. Mohmedhafiz Abdulhamid Kathiyara

I have done MA, B.Ed. M. Phil and PhD in Psychology subject and have also done Post Graduate Diploma in Counseling Psychology. I am a Gold Medalist in Clinical Psychology. I have done my studies from Gujarat University and PhD from Dr B.A.O.U., Gujarat. Till date I have written 9 books. Have presented research papers in international and national level seminars and conferences. I have a total of 20 years of experience in the teaching field.

Also available on: amazon.in

Shubhanjali Prakashan

28/11, Ajitganj Colony, T.P. Nagar, Kanpur-208023, Mob. 9870797216
subhanjaliprakashan@gmail.com

₹=550/-

Scanned by CamScanner

भाषा-साहित्य एवं सामाजिक विज्ञान में शोध (अनुसन्धान)

(Research in Linguistics Literature And Social Science)

सम्पादक द्वय

डॉ. भावना एन. सावलिया

हिन्दी विभाग

आर्ट्स कॉलेज, मोडासा

Dr. Mohmedhafiz Abdulhamid Kathiyara

H.O.D., Department Of Psychology
Shri S. K. Shah & Shri Krishna O. M. Arts College,
Modasa

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य संस्थान,

गुजरात, अहमदाबाद

Scanned by CamScanner

9 788194 627999 >

ISBN : 978-81-946279-9-9

© डॉ. भावना एन. सावलिया (सर्वाधिकार लेखकाधीन)

प्रकाशक :

शुभाञ्जलि प्रकाशन
28/11, अजीतगंज कॉलोनी,
टी. पी. नगर, कानपुर-208023
मोबाइल : +91 8707872316
subhanjaliprakashan@gmail.com

संस्करण :

प्रथम - 2024

मूल्य :

हार्ड कवर : ₹ 550/- (रुपये पाँच सौ पचास मात्र)

आवरण सज्जा :

इंजी. रिन्की चन्द्रा

शब्द-सज्जा :

विद्या ग्राफिक्स, कानपुर

Research in Linguistics Literature And Social Science
Edited by
Dr. Bhawna N Savlia
Dr. Mohmedhafiz Abdulhamid Kathiyara

पुरोवाक्

साहित्य और समाज में अविनाभाव सम्बन्ध है। आदि मानव ने जब अपनी आँख खोली तो उसे समाज की महती आवश्यकता हुई और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वह आविष्कार की ओर उन्मुख हुआ। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसे प्रकृति ने बुद्धि, प्रतिभा और प्रज्ञा जैसी अन्तःशक्तियाँ प्रदान कीं जिनके माध्यम से वह आए दिन आविष्कार पर आविष्कार करता गया और आज वह साहित्य, संगीत, कला-संस्कृति और सामाजिक विज्ञान आदि विविध क्षेत्रों में अपने शोधपरक आयामों तक पहुँच चुका है। 'शोध' एक पुल्लिंग शब्द है जो शुध् क्रिया से घञ् प्रत्यय लगा कर निष्पादित होता है। जिसके अर्थ- शुद्धि, संस्कार, संशोधन और समाधान आदि होते हैं।

यह शोध साहित्य और सामाजिक विज्ञान के विषयों में एक नया संस्कारात्मक प्रादर्श खोजता है जिसके प्रतिष्ठापन से समाज और व्यक्ति उन्नयन और प्रगति के एक नव्य युग में पदार्पण करता है।

यह एक बहुत ही श्लाघनीय कार्य है जो डॉ. भावना सावलिया और डॉ. मोहमद हफीज अब्दुल हमीद कठियारा ने एक शोध-पत्रात्मक पुस्तक को प्रकाशित करने का संकल्प लिया। जिसमें अन्यान्य विषयों पर अनुसन्धानात्मक आलेख निबद्ध किए गए हैं। निःसन्देह दोनों भूरि-भूरि प्रशंसा के पात्र हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में साहित्यिक और सामाजिक विज्ञान से सम्बन्धित अनेकशः ऐसे शोध-आलेख हैं जिनमें रचनाकारों ने अपने अनुसन्धानात्मक कौशल से अपनी अमूर्त अन्तर्दृष्टि को मूर्त रूप में आकलित किया है। मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक उन शोध-युक्त आन्वीक्षिकी की परिकल्पानाओं से शोधार्थियों के लिए अवश्य एक सन्दर्भ-ग्रन्थ रूप में सहायक होगी। प्रस्तुत शोध-पत्रात्मक पुस्तक में सम्मिलित रचनाकारों ने हिन्दी साहित्य एवं अन्य सामाजिक विषयों पर प्रकाशित पुस्तकों के सन्दर्भ में जो भी सूक्ष्म अनुभवों को एकत्रित कर एक सारगर्भित रूप दिया है वह निश्चित ही तत्सम्बन्धित क्षेत्र में उपादेय सिद्ध होगा। इन्हीं शुभेच्छाओं के साथ...

- डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव

Scanned by CamScanner

सम्पादकीय कलम से

आप सबको वसंत ऋतु की ढेर सारी शुभकामनाएँ.....

साहित्य समग्र जीवन-सृष्टि के कल्याण का सिंचन करता है। साहित्य मानव जीवन मूल्यों की शिक्षा प्रदान कर मनुष्य के आंतरिक और भौतिक सुखों के विभिन्न आयामों का उत्थान करके जीवन में इन्द्रधनुषी रंग भरता है।

बिल्कुल इसी प्रकार किसी भी विषय या पक्ष पर का शोध-कार्य मानव जीवन में गहन ज्ञान का संचार करता है। बौद्धिक स्तर का विकास करता है, विश्लेषण स्तर को गति देता है, समाज और राष्ट्र की प्रगति के लिए नई दिशा प्रदान करता है। शोध पूर्वाग्रहों का निदान करके प्राप्त ज्ञान का सत्यापन करता है। पुराने सिद्धांतों का परीक्षण करके नये सिद्धांतों का निर्माण करता है। प्रस्तुत पुस्तक में भाषा-साहित्य और सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों पर शोध-पत्र लिखे गए हैं। इसमें शोधकर्ता ने छुपे हुए नये बिन्दुओं को प्रकाश में लाकर मानव और समाज के विकास में सहयोग देने का प्रयास किया है।

हमारे लिए बड़े हर्ष की बात है कि 'साहित्य और सामाजिक विज्ञान में शोध' का पुस्तक जल्दी हमारे हाथ में होगी।

आशा करती हूँ कि यह पुस्तक पाठकों शोधार्थी छात्रों के लिए मार्गदर्शन का कार्य करेगी।

सर्वेभवन्तुसुखिन: सर्वेसन्तुनिरामया:।
सर्वेभद्राणिपश्यन्तु माकश्चिदु:खभाग्भवेत्।।
तथास्तु।

- डॉ. भावना एन. सावलिया
हिन्दी विभाग, आर्ट्स कॉलेज, मोडासा

- Dr. Mohmedhafiz Abdulhamid Kathiyara
H.O.D., Department Of Psychology
Shri S. K. Shah & Shri Krishna O. M. Arts College,
Modasa

अनुक्रम

भूमिका

संपादकीय कलम से

१. डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव कृत 'श्रीहनुमच्चरित' खण्ड काव्य में जीवन-दर्शन - डॉ. भावना सावलिया 7

२. डॉ. भावना सावलिया के पद्य-साहित्य का अनुशीलन - डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव 16

३. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में निरूपित कृषक जीवन - डॉ. पारुल ए. परमार 27

४. प्रेमचंद के उपन्यास साहित्य की विशेषताएँ - झाला गीता 34

५. साहित्य का समाज पर प्रभाव - डॉ. पूनम के. मोरी 37

६. समकालीन विमर्श में वर्तमान हिन्दी काव्य : एक अध्ययन - डॉ. उमा सिंह किसलय 41

७. डॉ. भावना सावलिया की कविताओं में भाव-सौन्दर्य (सप्त कवि संकलन के संदर्भ में) - प्रजापति आकाश के. 52

८. चन्द्रपालसिंह यादव के गद्य एवं पद्य साहित्य का संक्षिप्त अनुशीलन - डॉ. भावना सावलिया 56

९. भारतीय मनोविज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य - परमार गिरीशभाई आर. 65

Scanned by CamScanner

चन्द्रपालसिंह यादव के गद्य एवं पद्य साहित्य का संक्षिप्त अनुशीलन

- डॉ. भावना एन. सावलिया

संक्षिप्त परिचय :

साहित्यिक परिचय:

लेखन-संसार : डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव से प्रत्यक्ष रूप में मुझे बातचीत करने का शुभावसर मिला और उनसे उनके लेखनकाल तथा परिस्थितियों से मैं रूबरू हुई।

डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव कक्षा-8 से ही लिखते आ रहे हैं। उन्हें यह प्रेरणा अर्ध स्वप्नावस्था में महाकवि तुलसीदास से मिली। उस समय उन्होंने श्रीराम के जीवनवृत्त को काव्य में लिख दिया था। वर्तमान में गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित कहानी संग्रह उन्होंने कक्षा 9-10 में ही लिख दिया था। अकादमी से ही प्रकाशित 'वात्सल्यान्तर' खण्डकाव्य उन्होंने कक्षा-12 में लिख डाला था।

अभी तक डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव की प्रकाशित पुस्तकों का विवरण ऊपर दे दिया गया है।

डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव अपने छात्र जीवन से ही परिवार के उत्तरदायित्व के निर्वहन में रहे। उनके कृतित्व में जीवन का सब भुक्त पर्यावरण है। जो भी उन्होंने लिखा उसे उन्होंने उसमें डूब कर लिखा है। भोग कर उकेरा है। वह कवि हैं, लेखक भी हैं और एक समालोचक भी। उनकी कृतियों पर हम संक्षिप्त में प्रकाश डालने का यत्न करते हैं।

1. हेरत हेरत हे सखी : यह डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव का प्रथम काव्य-संग्रह है। जिसमें गीत, कविताएँ, मुक्तक संग्रहीत हैं। उनके बचपन से लेकर प्रौढ़ होने तक की प्रतिनिधि रचनाएँ संकलित की गई हैं। जिनमें प्रेम, संघर्ष, मानवतावाद, निराशा, हताशा, यथार्थ और आदर्श से सम्बन्धित रचनाएँ हैं। उनके काव्य में प्रबन्धात्मकता है। मिथकीय संस्पर्श है।

इसी काव्य-संग्रह के साथ डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव द्वारा 'राही अपनी मंजिल के' एक राष्ट्रीय स्तर का काव्य-संकलन भी संपादित हुआ था।

डॉ. किशोर काबरा के शब्दों में- ''स्याही को संजीवनी की तरह अक्षरों में घोल कर कागज़ पर बिखराने की कला में दक्ष श्री चन्द्रपालसिंह यादव की कविताओं को हृदय की अन्तर्तम आस्था के साथ जुड़ा पाया है। इनकी छंद एवं लय-सिद्धि जहाँ एक ओर भाव-समृद्धि की परिचायिका है, वहीं वैचारिक सतर्कता इन्हें युगबोध के समानान्तर लाकर खड़ा करती है। प्रबन्ध-चेतना, सांस्कृतिक गीतिमत्ता, मिथकीय संस्पर्श एवं दार्शनिक चिन्तन इन्हें माँ के दूध के साथ मिला है। ऐसी अनुभूति पद-पद पर होती है।'हेरत हेरत हे सखी' काव्य-संग्रह में छंदस-अछंदस कविता के लघु एवं सुदीर्घ सभी प्रयोगों को स्थान मिला है। एक नए मुहावरे का टटकापन इनकी कविताओं में झाँकता दिखाई देता है। कलम सधी है सिद्धि-प्रसिद्धि अभी बाकी है।''

2. वात्सल्यान्तर : यह एक उत्पाद्य खण्डकाव्य है। जिसमें काल्पनिक कथानक कवि के द्वारा गढ़ा गया है। डॉ. अम्बाशंकर के शब्दों में- ''उन्होंने यह काव्य आज से पहले अपने विद्यार्थी जीवन में लिखा है। कुछ क्षेपक उन्होंने बाद में जोड़े हैं। तब का कथानक आज भी, अद्यतन देशकाल एवं परिवेश से तादात्मय रखता है।'' ''अधेड़ावस्था में पुनर्विवाह करने के दुष्परिणामों और सौतेली माँ के वात्सल्य में अपनी-पराई संतान के प्रति जो अंतर होता है उसको निरूपित करना इस प्रबन्धकाव्य का मुख्य उद्देश्य है।''

यह प्रबन्धकाव्यात्म शैली में है। एक मुख्य पात्र कवि स्वयं है जो अपने घर की दीवार के छेद से घटनाओं का सूत्रपात करता है। इस खण्डकाव्य में सौतेली लड़की, सौतेली माँ और कवि स्वयं तीन पात्र हैं। सौतेली लड़की के साथ सौतेली माँ जो भी दुर्व्यवहार करती है कवि स्वयं छिद्र से देखता है। एक दिन सौतेली माँ सौतेली लड़की उषा को ज़हर खीर में मिलाकर खाने को देती है तो कवि उसे बचाने को शिव बनकर आवाज़ से रोकता है और मरने का बहाना बनाकर पड़ रहने को कहता है। उषा ऐसा ही करती है। जब उसका पिता श्मशान में उसे दफनाने जाता है तो वहाँ कवि स्वयं यमराज बनकर उसे डाँटता है और पाप से मुक्ति पाने के लिए पत्नी के साथ उसे काशी जाकर स्नान करने की आज्ञा देता है। कवि स्वयं उषा को लड़के के भेष में काशी जाने को कहता है।

Scanned by CamScanner

सभी काशी पहुँचते हैं। सौतेली माँ अपनी दो साल की बच्ची को गंगा में हाथ पकड़ कर नहला रही होती है। तभी कवि संन्यासी बनकर उसकी और उसके पति की पोल खोल देता है। सौतेली माँ घबरा जाती है और बच्चों पानी में छूट जाती है। वह रोने लगती है। कवि बच्ची को किसी के द्वारा बचवा लेता है। वह सौतेली माँ अपनी और पराई बेटी के प्रति वात्सल्य के अन्तर को समझाता है। सौतेली माँ अपना अपराध स्वीकार कर लेती है। वह प्रायश्चित करना चाहती है। संन्यासी बना कवि दोनों बेटियों को उपस्थित कर देता है। सौतेली माँ दोनों बेटियों को अपने गले से चिपका लेती है।

3. काँटों का गुलाब उपन्यास : यह एक प्रोफेसर पुंडरीक और एक छात्रा महाश्वेता की अद्‌भुत प्रेम कहानी पर लिखा गया उपन्यास है। पुंडरीक को महाश्वेता से अत्यधिक प्यार हो जाता है। जबकि महाश्वेता उन्हें अपने बीवी-बच्चों के साथ खुश रहने की हिदायत देती रहती है। महाश्वेता का विवाह हो जाता है। पुंडरीक दुखी होकर अपने घर चले जाते हैं। पुंडरीक की पत्नी का अपने पति को उनका प्यार दिलाने के लिए अपने पत्नीत्व का भी बलिदान उपन्यास के कथानक को अप्रतिम बना देता है। महाश्वेता के विवाह में पुंडरीक भेंट स्वरूप एक दीवार घड़ी भिजवाता है। जिसमें पुंडरीक का उसकी आवाज का एक संदेश यंत्र है जो एक रात बजता है। महाश्वेता लोक लाज के कारण उसे लेकर पटक देती है। यन्त्र बाहर निकल जाता है। सुबह में वह उसे लेकर सींकचे से बाहर फेंक देती है लेकिन वह एक कुल्ला कर रहे मिकेनिक रफीक के पास गिरता है। वह उसे उठा लेता है। महाश्वेता ऊपर से रफीक को उसे दे देने का इशारा करती है। उसकी सास यह देख लेती है और वह इस घटना को कुछ और ही समझ लेती है। घर में बात फैलती है। उसे कुलटा समझ कर एक दिन महाश्वेता का ससुर और न चाहते हुए उसके पति देवराज को भी लेकर उसे नदी में कूद जाने को विवश कर देते हैं। और महाश्वेता पुंडरीक के साथ भाग गई है यह बात महाश्वेता के भाई रघुराज तक पहुँचा दी जाती है। रघुराज इस बात को नहीं मानता और वह अपनी बहन की हत्या का आरोप उसके ससुराल वालों पर लगा देता है। पुंडरीक एक साल की छुट्टी पर चला जाता है। वह इस घटना से बेखबर है। वह एक समाचार पत्र का सम्पादक है। उसकी पत्नी एक कार हादसे में नदी में गिर जाती है। इससे पुंडरीक बहुत टूट जाता है। अदालत में केस चलता है।

दोनों पक्ष उपस्थित होते हैं। पुंडरीक महाश्वेता की हत्या का जुर्म खुद कबूल कर लेता है जिससे महाश्वेता का पति देवराज जेल से छूट जाए। लेकिन उसके मित्र लोग इसे स्वीकार नहीं करते। जज अपना फैसला देने को होता है तभी एक महिला वकील बुर्के में किसी औरत को लेकर अदालत में उपस्थित होती है। वह महिला वकील पुंडरीक की पत्नी आपगा निकलती है और बुर्के वाली औरत महाश्वेता। जज भी हतप्रभ रह जाता है।

आपगा की सहेली सारा रहस्य जज को सुनाती है कि आपगा और पुंडरीक दोनों क्लास फैलो थे। महाश्वेता के प्रणय की एक त्रुटि से पुंडरीक का मन महाश्वेता के प्यार को सन्देह से देखने लगा जबकि यह पुंडरीक का केवल अपना भ्रम था। लेकिन वह महाश्वेता के प्रेम में पड़ गए। नदी में गिरी महाश्वेता को जब लोगों ने बचा लिया तब वह भी वहाँ पहुँची थी और उसे अपने घर ले आई थी। बाद में पूछने पर सब बातें महाश्वेता ने आपगा को बता दी थीं। आपगा को जब यह पता चला तो वह दुखी होकर भी अपने पति के प्रेम को सफल बनाने के लिए अपनी खुशियों को बलिदान को उद्यत हो गई और आपगा ने एक योजना बनाकर अपने को नदी में कार के साथ डूबने का नाटक किया। आपगा चाहती है कि कोर्ट महाश्वेता को पुंडरीक को सौंपने का फैसला दे। पुंडरीक आपगा के इस प्यार के बलिदान पर स्वयं बहुत पश्चाताप करता है। महाश्वेता के ससुराल वाले भी इस कहानी से मर्माहत हो जाते हैं। पुंडरीक अपनी पत्नी आपगा से क्षमा माँगता है और महाश्वेता का हाथ उसके पति देवराज के हाथ में सौंप देता है। ऐसा अभूतपूर्व कारुणिक दृश्य देखकर जज की आँखों से आँसू चू पड़ते हैं। सारा जनसमुदाय इस अद्‌भुत प्रेम से गदगद हो जाता है।

4. घूँघट की तमन्ना (उपन्यास) : यह उपन्यास चंबल के बीहड़ में रहने वाले एक दस्यु रणजीत सिंह की कहानी पर आधारित है। इस उपन्यास के कथानक से जुड़ीं अन्य सहयोगी घटनाएँ बढ़ी ही कौतुहल जनक हैं। जिनमें सामाजिक उन्नयन में बाधक दस्यु उत्पात का वीभत्स रूप प्रस्तुत किया गया है। जिनके सहायक तत्त्व समाज में उनके ही विरोधियों का दमन करवाते हैं। शोषण, बलात्कार और लूट-खसोट जैसी वारदातें आए दिन होती रहती हैं। उपन्यास का सूत्रपात बच्चों के एक खेल से होता है। जिसमें एक कुख्यात इनामी डाकू रणजीतसिंह बनता है और दूसरा बालक रतिंजय डी.एस.पी.। अन्य लड़के सिपाही। कहानी आगे बढ़ती

Scanned by CamScanner

है। बीच में बहुत सारे ऐसे उपकथानक आते हैं जो मुख्य कथानक को सुदृढ बनाते हैं। गाँव के ही एक बदमाश व्यक्ति के द्वारा डाकू के सरदार से मिलकर मन चाहे परिवार पर हमला करवाना, अपहरण और बलात्कार करवाना और किसी का कत्ल करके उसके जुर्म में जेल भिजवाना जैसे षड्यंत्र शामिल हैं। बच्चों खे चोर-सिपाही के खेल में डी.एस.पी बना बालक सचमुच एक डी.एस.पी. बनकर डाकुओं के खात्मे के लिए उस क्षेत्र में आ जाता है। डाकू रणजीतसिंह के सभी साथी मुठभेड़ में मारे जाते हैं। उसका घोड़ा चंबल के दलदल में समा जाता है। रणजीतसिंह दो -तीन दिन तक इधर उधर भटकता रहता है फिर किसी तरह बड़े सरदार के पास पहुँचता है। बड़ा सरदार उसे आज गहरा राज़ बताने लगता है कि जिस एस.पी. जनार्दन की बेटी अपर्णा का वह अपहरण करके लाया था वह उसकी ही बहन थी और जनार्दन उसका पिता। उसी ने जनार्दन की पत्नी की हत्या कर के उसके एक साल के बच्चे को छीन लिया था। वह बच्चा और कोई नहीं वही जवान सरदार रणजीतसिंह है। जिसको एक दिन साँप ने दंश मार दिया था। उसके घाव का खून चूसने से वह तो ठीक हो गया लेकिन वह अंधा हो गया। असली रणजीतसिंह वह नहीं वह बूढ़ा सरदार है जिसने अपना बदला लेने के लिए उसने अपना नाम इस जनार्दन एस. पी. के बेटे को दिया। यह सुनकर जवान रणजीतसिंह उस अंधे असली सरदार की खोपड़ी में बंदूक का बट दे मारता है। और गाँव की ओर भाग चलता है। गाँव जाकर वह देखता है तो उसकी बहन अपर्णा और डीएसपी रतिंजय की शादी हो चुकी है। वह अपनी बहन को डोली में बिठाने को आगे बढ़ता है तभी रतिंजय के द्वारा गिरफ़्तार करवा लिया जाता है।

5 अशकून सवेरा : यह एक कहानी संग्रह है। जिसमें डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव के बचपन से लेकर प्रौढ़ होने तक की कहानियाँ संकलित हैं। इस कहानी संग्ह में विविध संघर्षों से जूझते लोगों और कुरीतियों में जीवन यापन कर रहे लोगों की कुण्ठाओं का बेबाक चित्रण किया गया है। कहानियाँ छोटे-बड़े स्तर पर दलित मजदूर और मालिक के बीच असमानता पर तीक्ष्ण सवाल छोड़ती है। सामाजिक विद्रूपताओं को भी निसंकोच उजागर किया गया है। यथार्थ को दिखाकर आदर्श की ओर संकेत भी है। यही कहानी के वापसी का संकेत है।

6. साक़ी के पैमाने से : यह एक 128 पेज का मद्य-निषेध गीत है। जिसमें हर बन्ध की 7 वीं और 8 वीं लाइन मुखड़े के रूप में पुनरावर्तित होती है-

''धोखाधड़ी फ़रेब छलकता
साक़ी के पैमाने से।''

इस गीतकाव्य में मदिरा के नाम बताने के साथ-साथ उसे चौदह रत्नों में मानकर कवि मद्यनिषेध का उद्घोष करता है।

प्रस्तुत गीतिकाव्य में सामान्य लोगों की बौद्धिक अल्पता को दूर कर समाज में समता, बन्धुत्व एवं शान्ति की स्थापना के लिए सन्देश दिया गया है। व्यसनात्मकता को मिटाकर आत्मविश्वास जगाने के लिए व्यक्ति को स्वविवेक से सत्य और असत्य के निर्णय करने के योग्य बनाने का यह एक उद्गीत प्रयत्न है। दमित, वंचित और शोषित वे लोग जो हताश होकर मदिरा का सहारा लेते हैं कवि ऐसे मद्यपों के प्रति बड़ी आत्मीयता दिखाकर उन्हें इस मदिरापान के दलदल से बाहर निकालना चाहता है।

मनुष्य क्यों शराब पीता है! पीने वाले की क्या दुर्दशा होती है! क्या वह मदिरापान करना त्याग सकता है! अगर हाँ, तो कैसे! और मदिरापान के परित्याग से उसका जीवन कैसे सुखमय हो सकता है! यह सब हवाला मद्यनिषेध के रूप में कवि की एक स्तुत्य पहल बन जाती है।

7. वो ज़माना और था (ग़ज़ल-संग्रह) : 2023 में गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित यह हिन्दी ग़ज़ल संग्रह है। जैसा कि नाम से प्रतीत हो रहा है कि वो ज़माने और आज के इस ज़माने में फ़र्क है। पुरातन मूल्यों का पतन हुआ है नए मूल्यों की प्रतिष्ठापना हुई है। जिसमें फारसी अरूज़ के शिल्प के पालन के साथ कथ्य भारतीय है। ग़ज़लों में वैचारिक परिवर्तन की क्रान्ति है। ग़ज़ल का रुख आधुनिकतावादी और उत्तराआधुनिकतावादी का मोड़ लिये हुए है। पदों में लालित्य है। ग़ज़लों में कल्पनाशील लाक्षणिकता और संक्षिप्तता भी झलकती है। ग़ज़ल की भाषा मुहावरेदार है। उनमें प्रतीक और बिंब का विधान भी काबिले तारीफ है। इस ग़ज़ल संग्रह में वर्तमान तमाम ज्वलन्त पहलुओं -अकेलापन, छल-कपट, व्यवस्थागत विसंगतियाँ, अस्तित्ववाद आदि को बारीकी से अनुभूत करके सपाटबयानी में पेश किया गया है जो सहृदयों को गहराई से छूते हैं। ग़ज़लों में कथ्य की व्यापकता है। अक़्सर छन्द या बहर वही प्रयोग किए गए हैं जो हिन्दी छन्द हैं किन्तु उर्दू में भी वही बहर हैं। जिनमें फारसी के उच्चारण सम्बन्धित माथापच्ची नहीं है। बहुधा फेलुन वाली बहर का प्रयोग किया गया है जो भाषा को

Scanned by CamScanner

सहज और सरल बनाते हैं कहन में बाकायदा पेश करने में कोई इल्लत नहीं आती। समकालीन विमर्श में वर्तमान काव्य की जो धारा है वही इन सभी ग़ज़लों में प्रवाहित हो रही है। नया अंदाज़ है नई अभिव्यक्ति की पेशकश है। कवि ने ग़ज़लों में प्रयुक्त शब्दों के बहिर्मुख और अन्तर्मुख शब्द-संकेतों में सन्तुलन बनाकर रखा है। भारतीय छन्दशास्त्र की ग़ज़लों में वापसी है।

8. जिगर में एक शोला है (ग़ज़ल-संग्रह) : यह ग़ज़ल-संग्रह 2024 में गुजरात हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित हुआ है। यह भी हिन्दी ग़ज़ल संग्रह है। कवि के अपने दो शब्द में ग़ज़ल का पूरा इतिहास संक्षेप में आगे दे दिया गया है। 'वो ज़माना और था' की तरह यह ग़ज़ल-संग्रह भी उसी नक्शे-क़दम पर लिखा गया है। प्रस्तुत ग़ज़ल-संग्रह में भी नए उद्‌गार हैं, नई भावभूमि है, यथार्थवादी दृष्टिकोण है। आत्मकेन्द्रित समाज, बाजारवाद, द्वन्द्व, अन्तर्द्वन्द्व, राजनैतिक पतन, अन्तर्विरोध, धार्मिक उन्माद, अन्धश्रद्धा और भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं पर डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव ने संक्षिप्तत: बड़े ही तीक्ष्ण व्यंग्य प्रस्तुत किए हैं। ग़ज़ल की संरचना में सार्थक पद और उनका सन्तुलित वज़्न रखा गया है। शेर के दोनों मिसरे परस्पर सम्बद्ध हैं। मात्रिक छन्दों में ग़ज़लों की बहुलता है। उन्हीं बहरों या छन्दों का प्रयोग किया है जो उर्दू और हिन्दी में समान रूप से प्रचलित हैं। भाषा एक दम सुबोध, सहज और सरल है। कवि ने ग़ज़लों में अविधार्थ और लक्ष्यार्थ का गूढ संश्लेष उपस्थित किया है। अलंकारों का भी नैसर्गिक प्रयोग है। प्रस्तुत ग़ज़ल-संग्रह सच्चे अर्थ में एक उपादेय दस्तावेज बन गया है।

9. श्रीहनुमच्चरित: (खण्डकाव्य) : श्रीहनुमच्चरित एक अनोखी शैली में लिखा खण्डकाव्य है। सीता माता की खोज तो प्रत्येक भारतीय के मानस-पटल पर अंकित है। डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव से इस खण्डकाव्य में मेघनाद के मारे जाने के उपरान्त सुबेल पर्वत पर निर्मित श्रीराम और लक्ष्मण की कुटिया में सुरक्षा की दृष्टि से नियुक्त श्री हनुमान के सोचने के माध्यम से कथा का सुत्रपात किया है।

मुख्य कहानी पाताललोक के अधिपति अहिरावण द्वारा अपहरण कर लिये गए श्रीराम-लक्ष्मण के समाचार से आरम्भ होती है। जिसमें श्रीहनुमान पाताल लोक जाते हैं। वहाँ उनके पुत्र मकरध्वज से भेंट होती है। अहिरावण द्वारा बलात् पत्नी बनाई हुई नागकन्या चित्रसेना से अहिरावण के रहस्य का श्रीहनुमान को ज्ञान होता है। वहाँ पर इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए श्रीहनुमान को पंचमुखी रूप

धारण करना पड़ता है। और कामाख्या देवी के मन्दिर में पाँच दिशाओं में जल रहे पाँचों दीपकों को वह एक साथ पाँचों मुखों की फूँक से बुझा देते हैं। इस प्रकार अहिरावण का अन्त हो जाता है।

डॉ. चन्द्रपालसिंह यादव ने प्रस्तुत कथा के माध्यम से दलितों और नारी के अस्तित्व के रक्षण का सन्देश दिया है। परोपकार की भावना को पुष्ट करने का आह्वान किया है। स्वामी की रक्षा के लिए सेवक को हर सम्भव प्रयत्न करने को उद्यत रहना प्रथम दायित्व है।

10. यदुवंशोद्धार-चरित (खण्डकाव्य) : प्रस्तुत खण्डकाव्य का कथानक महाभारत युद्ध के उपरान्त गुजरात में प्रभास क्षेत्र में हुए यदुवंश के विनाश के आख्यान से सम्बन्धित है।

जो ईश्वर श्रीकृष्ण की इच्छानुसार घटित होता है। श्रीकृष्ण ने विचार किया कि यादव लोग उनके जाने के बाद पृथ्वी पर महा-उत्पात मचा सकते हैं अत: उनकी शक्ति को न्यून कर देना आवश्यक था और महाबली यादवों का परस्पर विनाश करा देना अनिवार्य था। यद्यपि यदुवंश के विनाश का बीज गांधारी के शाप में पहले ही बो दिया गया था किन्तु उसका फल्लवन दुर्वासा के शाप से तब होता है जब श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब ने स्त्री का भेष धारण कर पेट पर कढ़ाई कपड़े से ढक कर कुछ अन्य साथियों के साथ ऋषियों से यह जानना चाहा कि स्त्री बने साम्ब के गर्भ में बेटा है कि बेटी। तभी रुद्रावतारी दुर्वासा ने साम्ब को यदुवंश का विनाश करने वाले मूसल जनने का शाप दे डाला। महाराजा उग्रसेन के कहने पर उस मूसल को समुद्र के जल में घिसवा दिया बाद में बचे छोटे टुकड़े को ऐसे ही सागर में फेंक दिया गया जिसे एक मछली निगल गई। और उसे एक जरा नाम के बहेलिए ने अपने बाण की नोंक में लगा लिया। घिसे हुए मूसल का चूरा सागर के किनार ऐरका नाम की घास में उगकर खड़ा हो गया। शान्ति-यज्ञ के लिए द्वारका के सभी यादव प्रभास तीर्थ पर इकट्ठे होते हैं। वहाँ मदिरा का सेवन भी किया जाता है। सात्यिकी और कृतवर्मा में वाद-विवाद होता है। भयानक युद्ध छिड़ जाता है। शस्त्र खत्म हो जाने पर सभी यादव ऐरका घास उखाड़ कर युद्ध करने लगते हैं इस प्रकार महिलाओं और बच्चों को छोड़ कर सभी वीर यादव मारे जाते हैं। उसके बाद बलराम भी जलसमाधि ले लेते हैं। श्रीकृष्ण भी जरा बहेलिए के उसी बाण से आहत हो जाते हैं और वह भी अपने सारथी दारक को सन्देश देकर अपने धाम चले

Scanned by CamScanner

जाते हैं। दारक यह समाचार द्वारका में देता है जिसे सुनकर श्रीकृष्ण की रानियाँ पटरानियाँ और माता पिता सब अपने-अपने प्राण त्याग देते हैं। अर्जुन द्वारका आते है और महिलाओं और ब्च्चों को अपने साथ हस्तिनापुर ले जाते है। वहाँ बज्रनाभ को मथुरा का शासक बना देते हैं।

प्रस्तुत प्रबन्धकाव्य में मानवीय धरातल पर मदिरापान से भ्रष्ट हुई बुद्धि से कुल-विनाश जैसे दुष्परिणाम का संकेत किया गया है। समाज के उन्नयन के लिए मदिरा जैसे दुष्प्रभावी पदार्थों के सेवन से बचना चाहिए। कवि यही संदेश देना चाहता है।

11. प्रकृत्यै नमः संस्कृत-काव्य
12. संस्कृते दोहावली (संसकृत में दोहे)
13. सरल हिन्दी व्याकरण

अन्य सम्पादित काव्य-संकलन और भी हैं। गीत-संग्रह, दोहा-संग्रह एवं घनाक्षरी-संहिता जैसी पुस्तकें प्रकाश्य हैं।

समग्रतः देखा जाए तो डॉ चन्द्रपालसिंह यादव जी का साहित्य अंधकारमय समाज और राष्ट्र के लिए दीपक है। नूतन चेतना की मशाल है। जीवन में राह भटके लोगों के लिए दीपशिखा है। सच्चे अर्थ में वो समाज के व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के उन्नायक हैं। विश्व बंधुत्व की भावना के स्रोत है। राष्ट्रीय एकता के हिमायती हैं और स्वस्थ समाज एवं स्वच्छ राष्ट्र के निर्माण के लिए प्रेरणा स्रोत है।

हिन्दी विभाग
आर्ट्स कॉलेज मोडासा

Scanned by CamScanner